

## मथुरा तों पक्खोके

कृष्ण कनईईआ दे शहर मथुरा पहुंच गया बाबा नानक (अगसत 1512)

**लुच्चपुणे नूं जायज ठहराउद्यां पंडतां ने केहा "की करीए जी कलजुग दा पहरा है।"**

जगन नाथ पुरी विखे ही चैतन्या महांप्रभू ने गुरू साहब नूं खबर दिती कि पंड्यां दियां गन्दियां करतूतां करके बादशाह सिकन्दर लोधी नूं बहाना मिल गया मथुरा शहर लुट्टन ते तबाह करन दा। चैतन्या ने दस्स्या कि किवे कृष्ण जनम भूमी दा मुख मन्दर केशवकुंज (?) तबाह कर दिता गया है। जगन नाथ पुरी गुरू साहब मारच दे महीने विच्च सन ते मथुरा दा मेला भादरों दे महीने (अगसत) जनम अशटमी ते लगदा है। उंज मथुरा दी लट्ट मार होली (मारच महीना) वी मशहूर है।

इथे पहुंच पंड्यां नाल अफसोस वी कीता ते ओनां नूं अहसास दुआया कि " जो मै किया सो मै पायआ दोसु न दीजे अवर जना ॥" इह पंडे काम वाशना विच्च अत्रे होए, कृष्णा लीला दे नाम हेठ काम नूं मन्दर दे गरभ ग्रेह तक्क लै गए सन। हद्द दरजे दा लुच्चपुना लीला दे नां हेठ चल रेहा सी। ओदों इक्क तां मन्दरां विच्च दासियां रक्खियां हुन्दियां सन। फिर पंड्यां ने आम शर्धालूआं दियां धियां भैणां नाल वी माडा सलूक अरंभ्या होया सी। अजेहे हालातां विच्च फिर हुकमरान नूं तां बहाना मिलदा है। (जिवे सन्न 2017 विच्च सिरसे वाले साध नाल होया) जिवे कहन्दे कि अत्रा की भाले दो अक्खियां, सिकन्दर लोधी (1489 तों 1517 ई ने 1509-1510 ई च कृष्ण मन्दर तुड़वा के इथे मसीत बणवा दिती सी।

क्युकि बुरायी दी जदों आदत पै जावे तां थोड़ी कीत्यां सुधरदी नहीं। गुरू साहब ने इनां हालातां ते जदों बजुरग पंड्यां नाल गल कीती तां हर किसे दा इहो कहना सी कि इह कलजुग दा पहरा चल रेहा है। हुन तां इह कुझ ही होवेगा। गुरू साहब ने पंड्यां दी इस व्याख्या ते सवाल उठायआ कि दस्सो किथे है तुहाडा कलजुग? मै नूं तां सभ कुझ पहलां वाला कुदरती निजाम ही नजर आ रेहा है। मै नूं तां सिरफ तुहाडी सोच बदली नजर आ रही है। मरदाने ने रबाब छेड़ दिती ते शबद आया:-

रामकली महला 1 असटपदिया आं सतिगुर प्रसादि ॥  
सोयी चन्दु चड़ह से तारे सोयी दिनियरु तपत रहै ॥ सा धरती सो पउनु झुलारे जुग जिय खेले थाव कैसे ॥1॥  
जीवन तलब निवारि ॥ होवै परवाना करह धिडाना कलि लखन वीचारि ॥1॥ रहाउ ॥ कितै देसि न आया सुणीऐ तीरथ पासि न बैठा ॥ दाता दानु करे तह नाही महल उसारि न बैठा ॥2॥ जे को सतु करे सो छीजे तप घरि तपु न होयी ॥ जे को नाउ लए बदनावी कलि के लखन एई ॥3॥ जिसु सिकदारी तिसह खुआरी चाकर



जमना घाट। जिथे हिन्दू यातरी समरपन दे तौर ते मुंडन करवायआ करदे सन। बादशाह सिकन्दर लोधी ने मथुरा दे मुख मन्दर नूं ढाहंन उपरंत फरमान जारी कीता कि जमना दे कंढे कोयीं मुंडन शूंडन नही करेगा। कुझ समें बाद वेख्या गया कि नाईआं ने अजे वी मुंडन जारी रक्ख्या होया है ते वाल जमना विच ही सुट्ट दिन्दे हन। इह सुन के बादशाह नूं बहुत गुस्सा आया ते उस ने मथुरा विखे मुंडन करदे सारे नायी ही कतल करवा दिते। इथे ही घाट ते गुरू साहब दा यादगारी सथान गुरदुआरा गऊ घाट हुन्दा सी जिस नूं 1984 च साड फूक दिता गया। विडम्बना वेखो कि ओसे गुरू नानक दा सथान ढाह दिता गया जिस ने सिकन्दर लोधी दे जुलमां खिलाफ मुहंम छेड़ी होयी सी।

केहे इना ॥ जा सिकदारै पवै जंजीरी ता चाकर हथहु मरना ॥4॥ आखु गुना कलि आईऐ ॥ तेहु जुग केरा रहआ तपावसु जे गुन देह त पाईऐ ॥1॥ रहाउ ॥ कलि कलवाली सरा निबेड़ी काजी क्रिसना होआ ॥ बानी ब्रहमा बेदु अथरबनु करनी कीरति लहआ ॥5॥ पति विनु पूजा सत विनु संजमु जत विनु काहे जनेऊ ॥ नावहु धोवहु तिलकु चड़ावहु सुच विनु सोच न होयी ॥6॥ कलि परवानु कतेब कुरानु ॥ पोथी पंडित रहे पुरान ॥ नानक नाउ भया रहमानु ॥ करि करता तू एको जानु ॥7॥ नानक नामु मिले वड्यायी एदू उपरि करमु नहीं ॥ जे घरि होदैं मंगनि जाईऐ फिरि ओलामा मिलै तही ॥8॥1॥

इथे वेखो पंडतां दी तां खबर लई ही है नाल सुलतान सिकन्दर लोधी बारे वी इशारा दे दिता है। इथो इह वी इशारा मिलदा है कि शहर दा कोयी वड्डा पंडा मुसलमान बण के काजी दे अहुदे ते बैठा होया है। धुर गरमियां दे दिनां विच आउना वी तसदीक हो रेहा है; 'सोयी दिनियरु तपत रहै ॥'

कोयी कृष्ण कुमार नां दा चौबे गोत दा पंडा गुरू साहब दी चरनी आ लग्गा ते सिक्खी दा प्रचारक बणया। इक्क सदी पहलां तक्क इस दे प्रवार दे लोक सिक्खी दे धारनी सन। इहनां दे घर/ मुहल्ले गुरदुआरा साहब वी हुन्दा सी जो हुन अलोप है।

## मथरा- निरंजनी साधूआं केहा बाबा जी साडे वी पल्ले कुझ पाओ

सोढी मेहरवान ने लिख्या है कि जदों बाबा मथरा पहुंच्या केशव कुंज मन्दर लागे डेरा कीता। इलाके



मथरा - खारे पानी दा खुह मिट्टा कीता। इथे गुरू साहब जिल्ये रुके सन उह थां गुरू नानक बगीची कहाई। इथे ही इक्क खुह दा खारा जल आप दे चक्खन नाल मिठा होया। इह थां मुख कृष्ण जनम असथान दे लागे ही है ते जमना दर्या कोयी डेढ किलोमीटर हटवा वहन्दा है। अज्ज इथे सुन्दर गुरुदुआरा साहब 'गुरू नानक बगीची' मौजूद है ते उह खुह वी मौजूद है जिस दा जल मिट्टा कीता सी।



विच्च दुहायी मच गई कि अमीर घर दा साध होया ओह वाला नानक आ गया जे जिस ने हरदुआर कांशी ते प्रयाग ते होरनी थांयी पंड्यां नू राहे पायआ सी। सभ संत महंत गुरू नानक नू सुनन नू इकट्टे हो गए। ओदों गुरू साहब ने तेड चादर बन्नी होयी सी ते इक्क चादर उतें सी अते सिर ते परना बद्धा होया सी।

संगत विच्च बैठे इक्क महंत ने गुरू साहब कोलो पुच्छ्या कि बाबा जी तुहाडा अकाल पुरख निरंकार नाल मेल किवे होया है?

गुरू साहब ने केहा कि महंत जी मैं तां उहदी रजा विच्च रहन दी कोशिश कीती है। मैं तां बस उहदा जस गायआ है। मैं तां निरंकार दा मरासी बण गया वां। साहब ने ओथे धनासरी राग विच्च शबद बोल्या:-

सहजि मिलै मिल्या परवानु ॥ ना तिसु मरनु न आवनु जानु ॥ ठाकुर मह दासु दास मह सोइ ॥ जह देखा तह अवरु न कोइ ॥1॥ गुरुमुखि भगति सहज घरु पाईऐ ॥ बिनु गुरु भटे मरि आईऐ जाईऐ ॥1॥ रहाउ ॥ सो गुरु करउ जि साचु द्रिड़ावै ॥ अकथु कथावै सबदि मिलावै ॥ हरि के लोग अवर नही कारा ॥ साचउ ठाकुरु साचु प्यारा ॥2॥ तन मह मनुआ मनु मह साचा ॥ सो साचा मिलि साचे राचा ॥ सेवकु प्रभ के लागै पाय ॥ सतिगुरु पूरा मिलै मिलाय ॥3॥ आपि दिखावै आपे देखै ॥ हठि न पतीजै ना बहु भेखै ॥ घड़ि भाडे जिनि अमृतु पायआ

॥ प्रेम भगति प्रभि मनु पतियाया ॥4॥ पड़ि पड़ि भूलह चौटा खाह ॥ बहुतु स्यानप आवह जाह ॥ नामु जपै भउ भोजनु खाय ॥ गुरुमुखि सेवक रहे समाय ॥5॥ पूजि सिला तीरथ बन वासा ॥ भरमत डोलत भए उदासा ॥ मनि मैलै सूचा क्यु होइ ॥ साचि मिलै पावै पति सोइ ॥6॥ आचारा वीचारु सरीरि ॥ आदि जुगादि सहजि मनु धीरि ॥ पल पंकज मह कोटि उधारे ॥ करि किरपा गुरु मेलि प्यारे ॥7॥ किसु आगै प्रभ तुधु सालाही ॥ तुधु बिनु दूजा मै को नाही ॥ ज्यु तुधु भावै त्यु राखुरजाय ॥ नानक सहजि भाय गुन गाय ॥8॥2॥

गुरू साहब ने उपदेश दिता कि निरंकार दा मारग सच्च दा मारग है। जिल्ये आपने सरीर नू कोहणा, हट्ट करनां जां रब्ब नू मिलन दी जिद करनां, जंगलां बेल्यां विच्च भरमणां, पत्थर पूजने आदि सभ विअर्थ ने। सच्चे सतिगुरू दे उपदेश तहत सच्च ते चलद्यां सहज दे मारग दे धारनी रहन्दां सिरफ अकाल पुरख दी उसतत करनी है जां गुन गाउने ने। उहदे बारे वीचारां करनियां ने। कोयी पाखंड नही करने। विखावे नही करने।

## तुहाडा गुरू कौन है? -

- ओथे संतां महां पुरखां ने फिर गुरू साहब नू पुच्छ ल्या कि तुहाडा गुरू कौन है? गुरू साहब ने मैनु जो ग्यान हासल होया है निरंकार दी सिद्धी बखशश करके होया है। सो ओही मेरा गुरू है।

ततु निरंजनु जोति सबायी सोहं भेदु न कोयी जीउ ॥ अपरम्पर पारब्रहमु परमेसरु नानक गुरु मिल्या सोयी जीउ ॥

साहब ने फरमायआ कि जे मैनु कोयी सच्च विच्च रम्या, निरंकार दी उसतत विच्च लीन कोयी पुरख मिल जावे तां मैं वी उस दे चरनी लगा। सो गुरु करउ जि साचु द्रिड़ावै ॥ अकथु कथावै सबदि मिलावै ॥

ओथे फिर बाबे दी धन्न धन्न हो गई। हर कोयी दरशनां नू पहुंच रेहा सी।

याद रहे इनां संतां महंतां विच्चों जिस ने ज्यादा सवाल जवाब कीते सन उह निरंजनी फिरके दे संत महंत सन। इह फिरका राजसथान, गुजरात ते दक्खनी भारत विच्च परचलत सी।

## मथरा - "अरे यह भी कोयी साधू है, नां गीता माने नां गायतरी," इक्क महंत ने गुरू साहब ते कटाख कर दिता

ओदो गुरू साहब नू निरंकार दा वैराग छुट्टा ते रामकली दे चउपदे फिर मरदाने दी ते रबाब गाए:-

कोयी पड़ता सहसाकिरता कोयी पड़ै पुराना ॥ कोयी नामु जपै जपमाली लागे तिसै ध्याना ॥ अब ही कब ही किछु न जाना तेरा एको नामु पछाना ॥1॥ न जाना हरे मेरी कवन गते ॥ हम मूरख अग्यान सरनि प्रभ तेरी करि किरपा राखहु मेरी लाज पते ॥1॥ रहाउ ॥ कबहू

जियड़ा ऊभि चड़तु है कबहू जाय पयाले ॥ लोभी जियड़ा थिरु न रहतु है चारि कुंडा भाले ॥2॥ मरनु लिखाय मंडल मह आए जीवनु साजह मायी ॥ एकि चलें हम देखह सुआमी भाह बलंती आई ॥3॥ न किसी का मीतु न किसी का भायी ना किसै बापु न मायी ॥



गुरदुआरा गुरु नानक टिल्ला, बिन्दराबन (सज्जे 1978 तों पहलां)

प्रणवति नानक जे तू देवह अंते होइ सखायी ॥4॥1॥ साहब ने डंके दी चोट ते फिर ऐलान कीता कि मैं किसे संसकृति (जां सहसकृति) नूं पवितर नही मन्नदा, नां कोयी जोगा ध्यान लाउदा नां माला फेरदा हां। मैं तां निरंकार सिरफ तेरी उसतत ही पायी है। ऐ अकाल पुरख जे तुठां है तां इस समाज विच्च मेरी लाज पत रक्खी।

**मथरा- फिर वैशनव साधुआं ने आ पुच्छ्या कि बाबा जी तुहाडी केहड़ी सम्परदा है तुहाडे पंथ दा नां की है?**

इस दे जवाब विच्च फिर गुरू साहब ने रागु सारग विच्च आ के शबद गायआ:-

अपुने ठाकुर की हउ चेरी ॥ चरन गहे जगजीवन प्रभ के हउमै मारि निबेरी ॥1॥ रहाउ ॥ पूरन परम जोति परमेसर प्रीतम प्रान हमारे ॥ मोहन मोह लिया मनु मेरा समझसि सबदु बीचारे ॥1॥ मनमुख हीन होछी मति झूठी मनि तनि पीर सरिरे ॥ जब की राम रंगीले राती राम जपत मन धीरे ॥2॥ हउमै छोडि भई बैरागनि तब साची सुरति समानी ॥ अकुल निरंजन स्यु मनु मान्या बिसरी लाज लोकानी ॥3॥ भूर भविख नाही तुम जैसे मेरे प्रीतम प्रान अधारा ॥ हरि कै नामि रती सोहागनि नानक राम भतारा ॥

निम्रता दे पुंज गुरू ने फिर जवाब दित्ता कि मेरा पंथ तां उह निरंकार है। उहदा ही नौकर हां मैं। निरंकार दी

उसतत करद्या मेरे कवाड खुल्ल गए ने। मैं तां बस उस रंगीले राम निरंकार दा ही हो गया हां। उह राम जेहड़ा जंमदा मरदा नही। उहदी किरपा सदका मैनु हुन समाज विच्च आपनी पत्त दी कोयी प्रवाह नही रही। सो तुसी अन्दाजा ला लओ कि मेरा फिरका केहड़ा है?

मथरा दे मेले दौरान ही गुरू साहब ने मथरा दे सहायक सथानां जिवे बिन्द्राबन, ब्रिज भूमी, गोकल, गोवरधन दे सैर कीते। बिन्द्राबन वी ओनां ने मथरा वाला लुच्चपुना वेख्या। "जुज मह जोरि छली चन्द्रावलि कान क्रिसनु जादमु भया ॥ पारजातु गोपी लै आया बिन्द्राबन मह रंगु किया ॥" जे कृष्ण भगवान ने गोपियां नाल रंग तमाशो कीते सन ते चले तां सारे हद्द बन्ने टप्प गए सन। अगो बहाने कलजुग दे ला रहे सन, "जी की करीए कलिजुग दा पहरा है।"

कुझ इस प्रकार प्यार दा जाल पा के गुरू साहब ने समुची मथुरा जित्त लई सी।

इनां थावां दे पंड्यां नूं सुचेत करन उपरंत गुरू साहब फिर आपने सुलतानपुर दे पंथ ते रवाना हो गए। गोवरधन तों गुरू साहब ने रसता दिल्ली दे पच्छम पास्यो दी हो के रोहतक रांही जान दा चुण्णया। इनां सभ इलाक्यां विच्च इक्क अकाल दा होका देयी गए ते भरमां च पई लोकायी नूं मुकत करी गए।

**"अए बालक! तूं वी योग दीकशा लै" रोहतक दे बोहर मट्ट विच्च बाबे दुआले महंत हो गया**

मथुरा तों वक्ख वक्ख इलाक्या दे लोकां नूं तारदे होए गुरू साहब बोहर जां बहौर मट्ट जां असथल्ल बोहर

विच्च

◆ मथरा दियां साखियां -सोढी मेहरबान ते भायी मनी सिंघ अधारित। सोढी ने इथे लिख्या है कि गुरू साहब ने दक्खन दी यातरा विच्च पंज साल लाए सन।

अलवर विच्च इतहासिक सिक्ख असथान तां शायद नही है जिस तों साबत हुन्दा होवे कि इथे वी सिक्ख संगत मौजूद सी। नारनौल विखे जरूर संगत दा प्रवाह अज्ज तक चलदा आ रहा है। पर सथानक लोकां दी संगत होली होली घटदी गई ते सिरफ पंजाबी मूल दे लोक ही अज्ज संगत दा धुरा हन।

◆ ग्यानी- 141

गुरू साहब दे ददरेवा जान बाबत कुझ दुबिधा बणदी सी कि की उह दूसरी उदासी वेले बीकानेर वलों ददरेवा गए जां फिर इधरों मथुरा अलवर हुन्दे होए। हालां नारनौल विखे गुरू साहब दे जान बारे ग्यानी पहलां लिख ही चुक्के सन। पर नारनौल कोयी गुरू साहब दी यादगार नही है ते नां ही उनां दे आउन बाबत कोयी सथानक रवायत है। सिक्खां दी अबादी वी शहर विच चोखी है। फिर वी नारनौल दे मुख गुरदुआरे दे ग्रंथी सविन्दर सिंघ ने शक ज़ाहर कर दिता जदों उस ने दस्स्या कि अज्ज तों 20 साल पहलां नारनौल दे लागले कसबे अटेली मंडी (नकशा सूचक 28.105, 76.278) विचों पत्थर दी चरन पादुका मिली सी जो पुराततव महकमे ने सांभ लई सी। उदों शक ज़ाहर कीता ग्या सी कि हो संकदा है इह गुरू नानक दी होवे। कहन तों मतलब नारनौल बाबत होर खोज दी गुंजायश हैगी आ

हां जे नारनौल जाना साबत हुन्दा है तां फिर ददरेवा, साअवा अते सिरसा इस पास्यो जाना मन्था जावेगा। फिलहाल असी इह शहर दूसरी उदासी दी वापसी विच लाए हन।

कन्नपाटे जोगियां दे मट्ट विच्च पहुंच गए। लंगर पानी छक्या। अराम कीता ते फिर मट्ट विच्च हाजर जोगियां दे प्रवचन सुणने शुरू कीते। गुरू साहब दी करामाती शखसियत दी तो पहलां ही दूर दूर तक खबर पहुंच चुक्की सी।

मट्ट दे बजुरग महंत ने गुरू साहब नाल गल बात शुरू कर दिती। अज्ज किधर किधर दी सैल करके आए हो? कि तुसी केहड़े इलाके दे हो? केहड़ा सम्परदा दे हो? जदों गुरू साहब ने केहा कि उह किसे सम्परदा दे नही हन तां महंत ने सखत लफज वरतद्यां केहा कि अजे तक निगुरे ही घुंम रहे हो। गुरू साहब ने महंत दी निशा करायी कि मेरा तां गुरू निरंकार आप खुद ही है। महंत नूं दस्य्या कि तुसी निरंकार नूं मिलन दा जेहड़ा रसता अखत्यार कीता होया है उह ठीक नही, जेहड़ा तुसी समाधी ला के बह जांदे हो ते सुरत नूं खुल्ली छडू दिन्दे हो। मेरा रसता तां निरंकार दी सिफत सलाह है। मट्ट दी पूरी मंडली साहमने फिर गुरू साहब ने मरदाने दी रबाब ते रामकली विच्च दो शबद गाए:

रामकली महला 1 ॥ सुरति सबदु साखी मेरी सिंडी बाजै लोकु सुने ॥ पतु झौली मंगन के तापी भीख्या नामु पड़े ॥1॥ बाबा गोरखु जागै ॥ गोरखु सो जिनि गोइ उठाली करते बार न लागै ॥1॥ रहाउ ॥ पानी प्रान पवनि बंधि राखे चन्दु सूरजु मुखि दीए ॥ मरन जीवन कउ धरती दीनी एते गुन विसरे ॥2॥ सिध साधिक अरु जोगी जंगम पीर पुरस बहुतेरे ॥ जे तिन मिला त कीरति आखा ता मनु सेव करे ॥3॥ कागदु लूनु रहै घ्रित संगे पानी कमलु रहै ॥ ऐसे भगत मिलह जन नानक तिन जमु क्या करे ॥4॥4॥ रामकली महला 1 ॥ सुनि माछिन्द्रा नानकु बोलै ॥ वसगति पंच करे नह डोलै ॥ ऐसी जुगति जोग कउ पाले ॥ आपि तरे सगले कूल तारे ॥1॥ सो अउधूतु ऐसी मति पावै ॥ अहनिसे सुत्रि समाधि समावै ॥1॥ रहाउ ॥ भिख्या भाय भगति भै चलै ॥ होवै सु त्रिपति संतोखि अमुलै ॥ ध्यान रूपि होइ आसनु पावै ॥ सचि नामि ताडी चितु लावै ॥2॥ नानकु बोलै अमृत बानी ॥ सुनि माछिन्द्रा अउधू नीसानी ॥ आसा माह निरासु वलाए ॥ नेहचउ नानक करते पाए ॥3॥ प्रणवति नानकु अगमु सुणाए ॥ गुर चले की संधि

मिलाए ॥ दीख्या दारू भोजनु खाय ॥ छिय दरसन की सोझी पाय ॥4॥5॥

गुरू साहब दे जवाब सुन के महंत तां निरउतर हो ग्या। अगले नूं गुस्सा वी आया होवेगा कि साडे कोल रह के साडे ही चेल्यां विच्च साडे सिधांत खिलाफ प्रचार कर चल्या है। पर ओनी दिनी लोकां विच्च धारमिक शहणशीलता बहुत हुन्दी सी। उहदे चेल्यां विच्चों ही इक्क "पायी नाथ" नां दे जोगी ने गुरू साहब दे चरन फड़ लए कि बाबा मै तां अज्ज तों तेरा।

लगदा दो चार दिन गुरू साहब ने निरंकार दी कथा कीती होवेगी। जदों ओथो रवाना होन लगे तां पायी नाथ ने विछोडे दा दुक्ख ज़ाहर कीता। हो सकदै नाल चलन लई वी जिद्द कीती होवे पर गुरू साहब जित्ये कोयी हुन्दा सी ओनूं ओथे ही प्रचारक बनन दी हदायत करदे सन। पायी नाथ दा प्रेम वेख के गुरू साहब ने फिर शबद गाव्या:

सूही महला 1 ॥ जप तप का बंधु बेडला जितु लंघव वहला ॥ ना सरवरु ना ऊछलै ऐसा पँथु सुहेला ॥1॥ तेरा एको नामु मंजीठड़ा रता मेरा चोला सद रंग ढोला ॥1॥ रहाउ ॥ साजन चले प्यार्या क्यु मेला होयी ॥ जे गुन होवह गंठडीए मेलेगा सोयी ॥2॥ मिल्या होइ न वीछुडे जे मिल्या होयी ॥ आवा गउनु निवार्या है साचा सोयी ॥3॥ हउमै मारि निवार्या सीता है चोला ॥ गुर बचनी फलु पायआ सह के अमृत बोला ॥4॥ नानकु कहै सहेलीहो सहु खरा प्यारा ॥ हम सह केरिया दासिया साचा खसमु हमारा ॥

पायी नाथ नूं समझायआ कि नाम रूपी जहाज त्यार कर लै। फिर विछोडे दा मतलब ही नही रह जाएगा। जित्ये याद करेगा निरंकार ओथे ही हाजर मिलेगा। असी तां सभ उस निरंकार दे छोटे छोटे जिय हां।

शबद सुन के पायी नाथ नेहाल हो ग्या। दूर तक गुरू साहब नूं छडुन आया।

रोहतक तों फिर साहब जींद आ पहुंचे ते ओथे वी पुरानक कथावां नाल सबंधत नेडे तेडे कई असथान हन। जिवें जींद गोहाना सडक ते पांडो पिंडारा, हिसार सडक ते रायी राय, नरवाना सडक ते हंसदेहर जित्ये कपिल मुनी दे पिता ने भगती कीती, सफीदों रोड ते

ग्यानी- 140 ने सिरसे विखे गुरू जी दा आउना दूजी उदासी वेले ही लिख्या है।

रोहतक गुरू साहब केहड़े पासो पहुंचे इस गल ते साडी कोयी पक्की राय नही बण सकी। ग्यानी जी ने नारनौल तों रोहतक पहुंचना लिख्या है। क्युकि इस गल दे पक्के सबूत हन कि गुरू साहब साहवा (चुरू) वी गए सन। दूसरी उदासी वेले साहवा, ददरेवा जाना कुझ पास पे जादा है। सानूं लगदा है कि पहली उदासी दे वापसी वेले ही निपटायआ होवेगा। उंज गुरू साहब जदों किसे इलाके विच वड़दे सन तां नेडे तेडे दे सारे सबंधत सथान निपटाउदे सन। कई वारी उहनां नूं अगे पिछे वी जाना पैदा सी। किसे किसे असथान ते उह दो दो तित्र तित्र वारी वी गए। मिसाल दे तौर ते पटना, मालदा, चितागंग आदि। सो साडा अन्दाज़ा है इह सारे इलाके गुरू साहब ने इस उदासी वेले ही निपटाए होणगे। खेर इह इनां महत्तवपूरन वी नही है कि केहड़े थां तों किये गए। किसे थां ते जान दा सबूत ज्यादा महत्तव रक्खदा है। सो इह वी हो सकदै साहब सिरसे तों वापस रोहतक नूं आए होन कुझ होर महत्तवपूरन थावां नूं

निपटाउन। इह वी संभव है कि सिरसा, रोहतक जेहियां थावां गुरू साहब ने मुकामी दीर्या दौरान निपटाईआं होन। सो इह गल्ल आपां भविख दे खोजियां ते छडुदे हां।

खेर नकशे फोलद्या सानूं नारनौल तों रोहतक दे ऐन पैदल रसते विच्च ही इक्क पिंड नजर आया है नानकवास जां नानगवास। अन्दाज़ा है इह वी गुरू साहब दी कोयी ठाउर होवेगी। इह पिंड नारनौल तों 11 किलोमीटर पहाड़ है। इहदे चडहदे वल पिंड नंगल सिरोही ते लहन्दे विच्च पिंड डोंगरा अहीर है। (नकशा सूचक : 28.182949,76.174761) एसे नां दा ही पिंड चडहदे पास राजसथान विच वी है (नकशा सूचक: 280109155, 76.421550) कोयी गुरसिक्ख विदवान इस पिंड पहुंच के खोज बीन कर सकदा है। इह वी संभावना हो सकदी है कि पिंड दा नां नानक्यां तों प्या होवे जिवे नाना का वास।

बाकी रोहतक दे लागे 28 कि. मी. हटवा सिक्ख केंदर लक्खन माजरा तां है ही।

ਜਾਮਨੀ ਜਿਥੇ ਜਗਦਮਨੀ ਰਿਸ਼ੀ ਨੇ ਭਗਤੀ ਕੀਤੀ, ਬਰਾਹ ਪਿੰਡ ਜਿਥੇ ਇਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਸੂਰ-ਭਗਵਾਨ ਵਰਾਹ ਦਾ ਜਨਮ ਹੋਇਆ।

ਇਹ ਅਨੁਦਾਜ਼ਾ ਲਾਉਣਾ ਕਠਿਨ ਹੈ ਕਿ ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਜੀਂਦ ਵਿਚ ਕੇਹੜੇ ਸਥਾਨ ਤੇ ਠਹਰੇ ਸਨ।

ਜੀਂਦ ਤੋਂ ਫਿਰ ਭਾਗਲ, ਚੀਕਾ, ਖਰੌਦੀ ਹੁੰਦੇ ਹੋਏ ਕਮਾਲਪੁਰ ਪਹੁੰਚੇ ਜਿਥੇ ਗੁਰਦੁਆਰੇ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿਚ ਸਾਹਬ ਦੀ ਯਾਦਗਾਰ ਮੌਜੂਦ ਹੈ। ਖਰੌਦੀ ਵਿਚ ਜਿਸ ਮਾਧੀ ਕਾਨੀ ਨੇ ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਨੂੰ ਪ੍ਰਸ਼ਾਦਾ ਚੁਕਾਏ ਸੀ ਉਹ ਮਾਧੀ ਅੱਜ ਵੀ ਇਲਾਕੇ ਵਿਚ ਪੂਜੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਇਲਾਕੇ ਦੇ ਲੋਕ ਮਾਧੀ ਕਾਨੀ ਦੇ ਨਾਂ ਦੀ ਸੌਂਹ ਤੇ ਵਿਸ਼ਵਾਸ਼ ਕਰਦੇ ਹਨ। ਐਥੇ ਗੁਰਦੁਆਰਾ ਮੌਜੂਦ ਹੈ।



ਚੀਬਾਰਾ ਸਾਹਬ, ਚੀਟਾਵਾਲੀ, ਮਨਸਰਪੁਰ। ਚੰਦਨ ਦਾਸ ਨੂੰ ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਨੇ ਆਪਣੇ ਪੜ੍ਹਾਏ (ਖੜਾਵਾਂ) ਬਖਸ਼ਿਯਾਂ ਸਨ। ਅੱਜਕਲ ਇਹ ਪਿੰਡ ਚੀਟਾਵਾਲੀ ਦੇ ਇੱਕ ਬ੍ਰਾਹਮਣ ਪ੍ਰਵਾਰ ਕੋਲ ਹਨ। ਇਹ ਖੜਾਵਾਂ ਵੀ ਕਿਸੇ ਵੱਡੇ ਸ਼ਰਧਾਵਾਨ ਸਿੱਖ ਨੇ ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਨੂੰ ਭੇਟ ਕੀਤੀਆਂ ਹੋਣਗੀਆਂ। ਮਛੀ ਦੀ ਸ਼ਕਲ ਵਿਚ ਬਣੇ, ਉਤਮ ਕਾਰੀਗਰੀ ਦਾ ਨਮੂਨਾ ਹਨ, ਇਹ ਪੜ੍ਹਾਏ।

### ਚੰਦਨ ਦਾਸ ਪਿੰਡ ਚੀਟਾਵਾਲੇ ਦੇ ਘਰੋਂ ਨਿਕਲੀ ਚੰਦਨ ਦੀ ਖੁਸ਼ਬੋ ਚੁਫੇਰੇ ਫੈਲ ਗਈ

ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਦਾ ਸ਼ਰਧਾਵਾਨ ਸਿੱਖ ਚੰਦਨ ਦਾਸ (ਖ਼ਤਰੀ ਜਾਤ ਗੋਤ ਜੋਹਰ ਜਾਂ ਜਾੜਾ) ਚਿਰਾਂ ਤੋਂ ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਨੂੰ ਯਾਦ ਕਰਦਾ ਰਹਿੰਦਾ ਸੀ। ਕਮਾਲ ਪੁਰ ਤੋਂ ਚਲਕੇ ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਨੇ ਅੱਜ ਆ ਚੰਦਨ ਦਾਸ ਦੇ ਘਰ ਚਰਨ ਪਾਏ। (ਪਿੰਡ ਚੀਟਾਵਾਲੀ ਜਿਲਾ ਪਟਿਆਲਾ ਦੀ ਨਾਭਾ ਤਲੀਲ ਵਿਚ ਨਾਭਾ ਸੰਗਰੂਰ ਸੜਕ ਤੇ ਮੌਜੂਦ ਹੈ।)

ਐਥਰ ਉਸ ਦੇ ਘਰ ਦੋ ਦਿਨ ਪਹਿਲਾਂ ਬੱਚੇ ਦਾ ਜਨਮ ਹੋਇਆ ਸੀ। ਚੰਦਨ ਦਾਸ ਦੇ ਤਾਂ ਹਰ ਪਾਸੋਂ ਭਾਗ ਖੁਲ੍ਹ ਗਏ।

ਚੰਦਨ ਨੇ ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਅੱਗੇ ਅਰਜ਼ ਕੀਤੀ ਕਿ ਸਾਹਬ ਹੁਣ ਸਾਲ ਛੇ ਮਹੀਨੇ ਇਥੇ ਹੀ ਰਹੋ ਤੇ ਇਲਾਕੇ ਦੇ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਮੁਕਤ ਕਰੋ। ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਨੇ ਕੇਹਾ ਕਿ ਚੰਦਨ ਜੀ ਭਾਧੀ ਮਰਦਾਨਾ ਪਿੰਡ ਜਾਨ ਵਾਸਤੇ ਕਾਹਲ ਚ ਹੈ। ਪੰਜ ਸਾਲ ਹੋ ਗਏ ਨੇ ਘਰੋਂ ਨਿਕਲੇ ਨੂੰ। ਚੰਦਨ ਕਹਿਣ ਲੱਗਾ ਬਾਬਾ ਜੀ ਘਟੋ ਘਟੋ ਸਵਾ ਮਹੀਨਾ ਤਾਂ ਠਹਰ ਜਾਯੋ। ਬੱਚੇ ਦਾ ਧਮਾਨ ਕਰ ਲੈਏ। ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਨੇ ਚੰਦਨ ਨੂੰ ਸਲਾਹ ਦਿੱਤੀ ਕਿ ਬੇਸ਼ਕਕ ਜਸ਼ਨ ਤੁਸੀਂ ਹੁਣੇ ਮਨਾ ਲਯੋ। ਸਵਾ ਮਹੀਨਾ ਜਾਂ ਸੂਤਕ ਪਾਤਕ ਦਾ ਵਹਮ ਨਹੀਂ ਕਰਨਾ।

ਚੰਦਨ ਨੇ ਐਸੇ ਤਰਾਂ ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਦੇ ਉਪਦੇਸ਼ ਮੁਤਾਬਿਕ ਧਮਾਨ ਦੇ ਸਦੇ ਸਭ ਥਾਂ ਭੇਜ ਦਿੱਤੇ। ਹੋਰ ਤੇ ਹੋਰ ਜਿੰਨਾਂ ਨੂੰ ਕਮੀ ਕਮੀਨ ਕਹਿੰਦੇ ਸਨ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਵੀ ਸਦ੍ਹ ਲਯਾ। ਜਦੋਂ ਲੰਗਰਾਂ ਲੈਂਦੇ ਪੰਗਤਾਂ ਲੱਗ ਰਹਿੰਦੀਆਂ ਸਨ ਤਾਂ ਕੁਝ ਨੀਵੀਆਂ ਜਾਤਾਂ ਵਾਲੇ ਆਪਣੀ ਵਾਰੀ ਦੀ ਉਡੀਕ ਕਰ ਰਹੇ ਸਨ ਤਾਂ ਚੰਦਨ ਨੇ ਐਨਾਂ ਨੂੰ ਵੀ ਪੰਗਤ ਵਿਚ ਨਾਲ ਹੀ ਬਿਠਾ ਲਯਾ।

ਧਮਾਨ ਤੇ ਹਾਜ਼ਰ ਹੋਏ ਬ੍ਰਾਹਮਣਾਂ ਵਿਚ ਤਾਂ ਪਹਿਲਾਂ ਹੀ ਖੁਸਰ ਫੁਸਰ ਚਲ ਰਹੀ ਸੀ ਕਿ ਚੰਦਨ ਦਾਸ ਨੇ ਜੱਚਾ ਬੱਚਾ ਦਾ ਸਵਾ ਮਹੀਨਾ ਵੀ ਨਹੀਂ ਹੋਣ ਦਿੱਤਾ ਪਹਿਲਾਂ ਹੀ ਧਮਾਨ ਰੱਖ ਲਯਾ ਹੈ। ਐਨਾਂ ਨੇ ਇਹ ਕੁਝ ਵੇਖ ਕੇ ਦੁਹਾਧੀ ਦੇ ਦਿੱਤੀ ਕਿ ਇਹ ਲੰਗਰ ਭਿੱਟ ਚੁਕਕਾ ਹੈ। ਘਰ ਚ ਸੂਤਕ ਹੈ। ਚੰਦਨ ਦਾਸ ਨੂੰ ਲੰਗਰ ਨਹੀਂ ਸੀ ਲਾਉਣਾ ਚਾਹੀਦਾ।

ਐਥੋਂ ਫਿਰ ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਨੇ ਸਭ ਨੂੰ ਸਮਝਾਉਣਾ ਕੀਤਾ ਕਿ ਭਾਧੀ ਇਹ ਸੂਤਕ ਪਾਤਕ ਦੀ ਵਿਚਾਰਧਾਰਾ ਨਿਰਾ ਵਹਮ ਹੈ। ਜੀਵਾਂ ਦਾ ਜੰਮਣਾਂ ਮਰਨਾਂ ਤਾਂ ਨਿਰੰਤਰ ਚਲਦਾ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ। ਤੁਸੀਂ ਕਹਿੰਦੇ ਹੋ ਸੂਤਕ ਹੈ। ਪਰ ਕਦੀ ਅਹਸਾਸ ਕੀਤਾ ਜੇ ਕਿ ਜੋ ਲਕੜੀ ਜਾਂ ਸੁਕਾ ਗੋਹਾ ਤੁਸੀਂ ਬਾਲਦੇ ਹੋ ਉਸ ਵਿਚ ਵੀ ਸੂਤਕ ਦੀ ਕ੍ਰਿਯਾ ਚਲ ਰਹੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਲਕੜੀ ਬਾਲਨ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਕਦੀ ਸੋਚਿਏ ਕਿ ਧੁਨ ਦੇ ਘਰ ਸੂਤਕ ਹੈ ਕਿ ਨਹੀਂ।

ਬਾਲਨ ਵਾਲੇ ਗੋਹੇ ਦੇ ਅੰਦਰ ਜੇਹੜੇ ਕੀੜੇ ਨੇ ਐਨਾਂ ਦਾ ਸੂਤਕ ਚਲ ਰੇਹਾ ਕਿ ਨਹੀਂ। ਇਹ ਨਿਰਾ ਤੁਹਾਡਾ ਵਹਮ ਹੈ। ਐਥੇ ਫਿਰ ਮਰਦਾਨ ਦੀ ਰਬਾਬ ਨੇ ਰੰਗ ਬੱਤ ਦਿੱਤਾ ਜਦੋਂ ਸਾਹਬ ਨੇ ਇਹ ਸ਼ਬਦ ਪੜ੍ਹਿਆ:

ਜੇ ਕਰਿ ਸੂਤਕੁ ਮਤ੍ਰੀਏ ..(ਪੂਰਾ ਸ਼ਬਦ ਵੇਖੋ ਸਫਾ-113 ਬਨਾਰਸ ਵਿਚ)

ਬ੍ਰਾਹਮਣ ਦਲੀਲ ਪੱਕੜੀ ਚਾਰੇ ਖਾਣੇ ਚਿੱਤ ਹੋ ਚੁਕੇ ਸਨ। ਹਾਲਾਤ ਵੇਖ ਕੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਖਿੱਸਕਣਾ ਬੇਹੱਤਰ ਸਮਝਿਆ।

ਚੀਟਾਵਾਲੀ ਚੰਦਨ ਦਾਸ ਦੇ ਘਰ ਜਿਸ ਚੁਬਾਰੇ ਵਿਚ ਸਾਹਬ ਨੇ ਚਰਨ ਪਾਏ ਸਨ। ਉਹ ਚੁਬਾਰਾ ਹੀ ਲੋਕਾਂ ਵਾਸਤੇ ਪੂਜਨ ਜੀਗ ਹੋ ਗਿਆ। ਵਕਤ ਪਾ ਕੇ ਚੁਬਾਰਾ ਫੜਨ ਤੇ ਸੰਗਤਾਂ ਨੇ ਸੁੰਦਰ ਗੁਰਦੁਆਰਾ ਬਣਾ ਦਿੱਤਾ ਹੈ ਐਥੇ।

ਚੀਟਾਵਾਲੀ ਤੋਂ ਚਲਕੇ ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਮਾਲੇਰਕੋਟਲਾ ਆਏ। (ਜਾਂ ਇਹ ਵੀ ਹੋ ਸਕਦਾ ਹੈ ਕਿ ਮਾਲੇਰਕੋਟਲਾ ਤੋਂ ਚੀਟਾਵਾਲੀ ਵਲ ਗਏ ਹੋਣ। ਇਸ ਮਸਲੇ ਤੇ ਖੋਜ ਹੋਣੀ ਬਾਕੀ ਹੈ) ਮਾਲੇਰਕੋਟਲਾ ਐਥੋਂ ਅੱਜੇ ਨਵਾਂ ਨਵਾਂ ਭਾਵ 60 ਕੁ ਸਾਲ ਪਹਿਲਾਂ ਅਫਗਾਨੀ ਪਠਾਨ ਸ਼ੇਖ਼ ਸਦਰੁਦੀਨ ਨੇ ਵਸਾਏ ਆ ਸੀ। ਲੱਗਦਾ ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਦੀ ਉਸ ਨਾਲ ਸੁਲਤਾਨਪੁਰ ਵਿਖੇ ਪਹਿਲਾਂ ਹੀ ਭੇਟ ਹੋ ਚੁਕੀ ਸੀ।

ਕੁਝ ਲਿਖਾਰੀਆਂ ਦਾ ਮੰਨਣਾ ਹੈ ਕਿ ਇਸ ਪਠਾਨ ਨਾਲ ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਦਾ ਮੇਲ ਕਾਦਰਾਬਾਦ ਵਿਖੇ ਹੋਇਆ ਉਹ ਪਿੰਡ ਜੋ ਅੱਜ ਬੇ ਚਰਾਗ ਹੋ ਚੁਕਾ ਹੈ ਤੇ ਲਾਗੇ ਪਿੰਡ ਭਸੌੜ ਵਸਦਾ ਹੈ। ਕਾਦਰਾਬਾਦ ਪਠਾਣਾਂ ਨੇ ਹੀ ਵਸਾਏ ਆ ਸੀ ਜਿਥੇ ਕੱਚਾ/ਪੱਕਾ ਕਿਲਾ ਵੀ ਸੀ। ਪਰ ਬਾਦ ਵਿਚ ਪਠਾਣਾਂ ਨੇ ਕਾਦਰਾਬਾਦ ਦੀ ਥਾਂ ਮਲੇਰਕੋਟਲਾ ਨੂੰ ਵਸਾਏ ਆ ਤੇ ਇਸੇ ਨਗਰ ਨੂੰ ਅਹਮਿਯਤ ਦਿੱਤੀ। ਕਾਦਰਾਬਾਦ ਹੌਲੀ ਹੌਲੀ ਖ਼ਤਮ ਹੋ ਗਿਆ। ਇਹੋ ਕਾਰਨ ਕੁਝ ਲੋਕ ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਦੀ ਭਸੌੜ ਵਿਖੇ ਆਮਦ ਲਿਖਦੇ ਹਨ।

ਸੋ ਭਸੌੜ (ਕਾਦਰਾਬਾਦ) ਤੋਂ ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਭਾਂਗਾਵਾਲੀ ਗਏ। 1931 ਈ ਵਿਚ ਭਾਂਗਾਵਾਲੀ ਦੇ ਇੱਕ ਫਰਲਾਂਗ ਚੜ੍ਹਦੇ ਪਾਸੇ ਦੋ ਬੋਹੜ ਦੇ ਰੁੱਖਾਂ ਦਰਮਿਆਨ ਖੰਡਰ ਅਵਸਥਾ ਵਿਚ ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਦੀ ਯਾਦਗਾਰ ਹੁੰਦੀ ਸੀ। ਨਾਲ ਹੀ ਕੱਚਾ ਸਰੋਵਰ ਵੀ

हुन्दा सी। अज्ज दे हालातां दा पता नही। ्य  
इथों गुरू साहब पिंड बन भाउरा गए जिथे पिंड तों  
फरलांग दी दूरी ते उत्तर पच्छम वल गुरू साहब दी  
यादगारी है। कई ग्रंथां मुताबिक इथों ही गुरू साहब  
छींटावाली गए।

मालेरकोटले तों बाद गुरू साहब रायकोट कुझ चिर  
ठहर के जगरायो आए। जगरावां तों पिंड तेहाड़ा लाग्यो  
सिद्धे सुलतानपुर लोधी लई दर्या सतलुज पार कीता ते  
जा भैन नानकी नूं गलवकड़ी पाई।

## जदों भैन दा प्यार हजारं मीलां तों खिच्च ल्याया बाबे नूं

गुरू साहब ओदों बरम्मा (म्यांमार) विच्च सन जदों  
मरदाने दी गल मन्न के पिच्छे परतन दा फैसला ल्या।  
चल मरदान्या चलदे आं। मरदाना कहन लग्गा बाबा मैं  
कित्री वारी परतन लई केहा पर तूं नही मन्ना। अज्ज भैन  
दी याद आई तां सारे असूल मन्न दिते ई आ गया नां  
मोह।

गुरू साहब ने केहा ओए मरदान्यां तूं इनां स्याना किथों  
हो ग्यो? मरदाना कहन्दा बाबा तूं ही तां सभ सिखायआ  
ए गुरू साहब ने केहा मरदान्या गुरमत, मारूथल विच्च  
उग्या ठोहर नही है। गुरमत तां है ही सारी प्यार दी खेड।  
साडा निरंकार किरपालू है घालू है। जिस मुहब्बत विच्च  
सुआरथ नही। काम वाली मुहब्बत नही। उह उहदी  
भगती तुल ही है। मरदाना कहन लग्गा हां बाबा मैं  
पता है बेबे तै नूं रब्ब जाणदी है।

सो बाबा जदों सुलतानपुर लोधी वड्या शहर विच्च  
दुहायी मच गई। "बाबा नानक आ ग्या।" "बाबा नानक  
आ ग्या।" भैन दे आपने रब्ब रूपी भरा नाल मेल नूं  
किसे वी लिखारी ने लिखन दी जुरअत नही कीती। तें  
शायद इह वाली मुहब्बत ब्यान तों परे है।

गुरू साहब लग पग 6 सालां बाद घर आए। ्व

## माता पिता बाबे नूं मिलन सुलतानपुर आए

गुरू साहब दे सुलतानपुर पहुंचन ते अगली सवेर ही  
मरदाने ने काहली पा दित्ती सी कि बाबा मैं नूं तां तलवंडी  
जान दे। गुरू साहब ने आग्या दे दित्ती ते मरदाना  
तलवंडी पहुंच ग्या। मरदाने दे पहुंचन ते पिंड विच्च  
खुशी दी लहर दौड़ गई कि बाबा नानक जींदा जागदा  
है। पिंड विच्च दीवाली /ईद वाला महौल बण ग्या। सारे  
पिंड नूं चाय चड़ह ग्या। माता पिता ने जिवे सुण्या दोवां  
दा हिरदा खिड़इ उठ्या। माता त्रिपता कहन्दी मैं हुने  
जानी आ मरासियां दे घर। कालू ने केहा हौसला रक्ख,  
मरदाना आवेगा मिलन। पर मां नूं हौसला किथे।

जिवे मरासियां दे घर वल माता मुड़ी मरदाना  
अगलवांडी मिलन आया। चरनां ते सति करतार कीती।  
माता ने लाड प्यार दित्ता। "वे छेती दस्स, किथे ई मेरा  
नानक," माता बोली। मरदाने आख्या "अंमा बाबा जी

सुलतानपुर आ ओनां कुझ दिन बाद तलवंडी आउना  
हैं। अजे नवाब ते होर सज्जणां नूं मिले नही। मैं तां छेती  
अगले ही दिन आ ग्या।" माता बोली, "उह शुदायी क्यो  
नही आया?" मरदाने ने केहा अंमा बाबे नूं शुदायी नां  
कहो। उहदे अग्गे तां वड्डे वड्डे अकल वाले पानी भरदे  
ने। तूं तां भागां वाली निकली, तेरे घर पैगम्बर ने जनम  
ल्या है। उह तां अवतार है इस दुनियां नूं तारन आया है।  
माता दा मन्न भर आया। कहन्दी वे उह कुझ खांदा पीदा  
वी है कि नही? मेरा पुत लिस्सा हो गया होणे? 6 साल हो  
गए ने घोरे निकले नूं। उंनूं तां घर वी कुझ खान पीन दी  
प्रवाह नही सी हुन्दी, हुन किथे उह खांदा होवेगा?  
मरदाना कहन लग्गा अंमा उह तां सारी सिसटी नूं  
रिजक दिन्दा है उह नूं खान दा की घाटा। बाकी बेबे नूं मैं  
वायदा करके निकल्या सी कि आप रोटी मगरों खावांगा  
पहलां बाबे नूं खुआंवांगा। पर उह मरजी दा मालक है,  
जिय आए तां कुझ खा लए नही तां 2-2, 3-3 दिन तक्क  
उंनूं भूक्ख ही नही लग्गदी। माता कहन्दी मरदान्या जा  
उंनूं लै के आ पिता कालू ने केहा हौसला रक्ख अजे  
मरदाना आया है इंनूं कुझ खुआयो प्याओ।

अंमां ने रोटी पानी तों बाद मरदाने नूं मठयायी दा थाल ते  
नाल रेजा दित्ता। मरदान्या भलके फिर आवी मेरे पुत  
दियां मैं नूं गल्लां दस्सी।

मां कोलो रेहा नां गया ते कहन लग्गी मैं तां आपे जांनी  
आं सुलतानपुर। सोच विच्चार के कालू वी त्यार हो ग्या,  
"चल मैं नाल जानै। उस नालायक दा कोयी पता नही।  
किते फिर नां निकल जाए।"

ओधर खबर राय बुलार तक्क वी पहुंच गई। बुलार ने  
मरदाने नूं सुनेहा भेज आपने कोल बुला ल्या। मरदाने  
ने सारियां गल्लां दस्सियां कि राय साहब तुहाडे पिंड  
विच्च इलाही नूर पैदा होया है। उह सारी दुनियां नूं  
रुशनाय देवेगा। राय ने केहा कि मरदान्या किसे तरां  
नानक नूं पिंड लै के आ मरदाने ने दस्स्या कि "बाबे दे  
मापे वी कल्ह नूं जा रहे ने सुलतान पुर उंनूं मिलन। पर  
जजमान! बाबे दा टब्बर नाल कोयी मोह नही है। उह तां  
प्यार शरधा करके जदों कोयी याद करदा है तां पहुंच  
जांदा है।"

राय ने केहा मरदान्या जा कालू नूं सद्द ल्या। कालू आया  
ते उंनूं राय ने केहा कि कालू जा नानक कोल ते मेरा  
सुनेहा देयी कि राय तै नूं मिलना चाहन्दा है। मेरे वलो  
अधीनगी वाली गुजारिश करनी, अरदास करनी कि  
तुहाडा बिरध तुहानूं याद करदा है। मैं बिरध हो चुक्का  
हां सरीर दा कोयी पता नही।"

तीसरे दिन दोवे जी घोड़ी चड़ह सिद्धा सुलतानपुर  
रवाना हो गए। 150 किलो मीटर दा पैडा, दो दर्या पार  
करके, तलवंडी पहुंचे। पता लग्गा नानक तां वेई किनारे

साईकल यातरी -213. जित्थे गुरू साहब ने आराम कीता सी  
उह चुब्बारा सत्र 1931यी तक्क बिलकुल ठीक ठाक खड़ा सी।  
सुभावक है बाद विच्च कार सेवा वाले मूरखां ने उस दी वी कार  
सेवा करदित्ती। य साईकल यातरी -214.

आपने पुराने बेलियां नाल बैठा होवेगा। मां त्रिपता ने गवांढ दे बच्च्या नूं नाल ल्या ते ओथे पहुँच गई जित्थे अज कल्ह बेर साहब गुरदुआरा है।

जदों किसे ने दस्स्या कि कोयी माता मुंज्यां दे नाल इधर नूं आ रही है तां बाबा नानक अगलवांढी हो के मां नूं मिले। मां ने मत्था चुंम्या। गल नाल लाय आ। उच्चि उच्चि रोई। बाबे दे वी दो अथरू किरें। "वे आ की हाल बना ल्या ई सरीर दा। मैं मलाई आं मक्खणां नाल पुत पाल्या सी।"

माता दे साहमने सरीरों पतला दुबला 43 सालां दा इक्क जवान, सिर ते दो गज दा परना बद्धा होया है, इक्क चादर तेड बद्धी होयी है ते इक्क खदर दी चादर पिंडे दुआले है।

सारी ढानी जैराम दे घर वल हो तुरी।

घर पहुँचे। पिता ने जप्फी विच्च ल्या। कुझ वी बोलन दी हालत विच्च नही सी। लंमां चिर चुप्प छायी रही। अखीर बाबे ने पिता नूं केहा कि सरीर दा की हाल चाल है? पिता ने फिर उलाहमा मार दित्ता, "तैनूं साडे सरीर नाल की?" ठीक आ असी तैनूं कारोबार करन वासते नही कहन्दे पर रहो तां नेडे। 5 साल बाद आइयो। तैनूं की कोयी मरे कोयी जीवे।" गुरू साहब चुप्प रहे।

पिता ने पुछ्या, "अंजाण्यां नूं मिल्यो?" गुरू साहब ने केहा कि बेबे जी ने पक्खोके सुनेहा भेज दित्ता कि आ के मिल लयो। पिता नूं फिर गुस्सा आ ग्या, "तूं की समझदै कि मूला बच्च्यां नूं इस तरां घल्ल देवेगा? जा के आप लै के आ आपना टब्बर।"

पिता ने केहा राय बुलार ने सुनेहा दित्ता कि मेरा सरीर बिरध हो चुकै मेरी गुजारिश है मैंनू इक्क वार आ के मिल जा।" बाबे ने पिता नूं केहा कि "अजे मैं नवाब साहब नूं वी नही मिल्या। राय साहब नूं कहना मैं आउनां किसे दिन।" इक्क दो दिन बाद माता पिता परत आए।

बेबे जी दे भेजे सुनेहे दे बावजूद माता सुलक्खनी ते सहबजादे गुरू साहब नूं सुलतानपुर मिलन नां आए। सहुरे मूले चोने ने जिद्द जारी रक्खी कि प्राहुना आप आ

**ब**व बाकी लिखारियां ने लिख्या है कि गुरू साहब ने पूरे भारत ते लंका दा भरमन करके परतना कीता। पर रवायत इह दसदी है कि गुरू साहब भैन नूं मिलन नूं सफर विच्चे छडु आ जाँदे सन। दूसरे पासे जगन नाथ पुरी तों इस पासे दा रूट गहु नाल वाचीए तां इहो समझ पैदी है कि गुरू साहब वापसी ते सेध विच्च चल रहे सन। इस प्रकार सानूं ग्यानी जी दी खोज ज्यादा जची है। बहुती थांयी तां ग्यानी जी आप वी पहुँचे ते सथानक रवायत दी खोज कीती। प्रसिध इतहासकार सुरिन्दर सिंघ कोहली ने तां कई थांयी अक्खां बन्द करके ग्यानी नूं अपणाय आ है।

ग्यानी ने परतन दा पोह 1566 बिक्रमी मूताबिक दसम्बर 1509 ई कहुया है। जिस दा मतलब है खाना 1561बि. मूताबिक 1504 नूं होए सन। दूसरे पासे जो पक्के इतहास सबूत हन उहनां मूताबिक गुरू साहब दा परतना 1512 ई विच बणदा है। क्युकि पुरी विच चैतन्या आ महाप्रभु नाल मेल 1511 ई तों पहलां संभव नही। दूसरा ब्रहमा विच आवा दे सुनेहरी महल दा उदघाटन छनिछरवार 22 फरवरी ई नूं हुन्दा है। इहो तरीखां ही फिर आउन वालियां घटनावां नाल वी मेल खांदियां हन। पक्खोके गुरू साहब अखीर 1512 ई विच पहुँचदे हन।

के बच्च्या नूं लै के जाए। चोण्या दा तलवंडी वाल्यां ते गिल्ला सी कि ओनां नूं पता सी कि "नानक साधू सुभाय दा है ओनां ने साडी धी क्यो रोड़ी। ओनां साडे नाल धोखा कीता है।" नाले छोटे सहबजादे लखमी चन्द दा व्याह चोण्यां ने आप रक्ख्या सी। ध्यान रहे पहलां लखमी चन्द दा व्याह (1503 ई स्याल कुडमां दे घर गुरू साहब हर्लीं कर गए सन। बदकिसमती नाल उह स्याली नूंह सूतक विच ही गुजर गई सी। ऐतकां लखमी चन्द दा व्याह बटाले दे भंडारी प्रवार च रक्ख्या सी।

ओधर गुरू साहब ने सुनेहा भेज के भायी सनमुख नूं वी लहौरों सद्द्या। सनमुख कोलो पुच्छ्या कि की उह सी लंका जान लई बाबे दा साथ देवेगा? सनमुख अगरवाल ने आपणियां कारोबारी मजबूरियां दसियां। सनमुख ने गुरू साहब नूं रसते बारे सारा विसथार दस्स्या कि बेशक्क तुसी इथों ही बेड़ी लै लओ जां लखपत बन्दर तों लयो। पंजाब दे दर्यावां ते ओनी दिनी बेड़ी पैदी सी भाव जहाजरानी प्रचलत सी।

### बखश्या गया राए बुलार

कुझ दिन पक्खोके इलाके विच्च प्रचार करके गुरू साहब लहौर रसते तलवंडी पहुँचे। लग्गदै लहौर नवाब नाल वी मेल होया होवेगा। तलवंडी आपने घर जान दे बिजाए बाले दे खूह ते पहलां पहुँचे। फिर ओथों सिद्धे राय बुलार दे घर उनुं जा मिले।सलाम कीता। राय मंजे तों उठन लग्गा सी कि बाबे ने राय दे पैर फड़ के केहा 'नही राय साहब तुसी बैठो।' बाबे नूं राय ने मंजे ते बैठा ल्या। राय बेचैन हो ग्या। कहन लग्गा "नानक तेरे पैरां ते सिर रक्खन वासते तां तैनूं सद्द्यां है। तूं मेरे पैरी हत्य ला के मेरे ते जुलम कीता ई मैंनूं तेरे अशीरवाद, तेरी रहमत दी भुक्ख है। मेरा दिल तां चाहुन्दा सी तैनूं आप जा सुलतानपुर मिलदा पर इह उमर दा तकाजां इजाजत नही दिन्दा। नानक मेरे ते मेहर कर। मैंनू बखश लयो। मेरे नाल धोखा नां कर। मैं तैनूं पछाणदा वा। मेरे ते तरस कर।"

गुरू साहब ने केहा राय साहब तुसी धुर दरगाहों बखशे होए हो।

राय केहा मैंनू उस दा पता नही मैंनू तेरी बखशश चाहीदी है। बाबे ने केहा खुद्दा तुहाडे नाल है।

राय कहन लग्गा नानक नांह नां करी मैंनू इक्क वार तेरे पैरां ते सिर रक्ख लैणदे। जनम साखी विच्च आउदा है कि बाबे ने फिर बखश दर राय बुलार लई खोल दित्ता।

एने नूं माता त्रिपता आ गई। बाबे नूं गलवकड़ी विच्च लै ल्या। फिर उची उची रोना शुरू हो ग्या।

राय बुलार ने हुकम दे दित्ता कि अज्ज नानक खाना साडे नाल खाएगा। मुसलमानां ते हिन्दूआं दा खाना उदों वी सांझा नही सी हुन्दा। सो राय बुलार ने हुकम दित्ता कि बाबे नानक लई अज्ज बक्करा वहुया जावे। मठ्याईआं ल्यादियां जान। निधे ब्राहमन नूं हुकम करके सद्द्या गया कि उह गुरू साहब लई रसोयी ल्यार



घोड़े ते सवार हो माता पिता गुरू साहब नूं मिलन आए। बी:40 ने नाल मरदाना वी दिखा दित्ता है जो गलत है।

करे।

इस मौके ते फिर गुरू साहब ने सवादू भोजन बाबत शबद उचार्या।

नगरी नायकु नवतनो बालकु लील अनूप ॥ नारि न पुरखु न पंखनू साचउ चतुरु सररूप ॥ जी तिसु भावै सो थीए तू दीपकु तू धूप ॥ 7 ॥ गीत साद चाखे सुने बाद साद तनि रोगु ॥ सचु भावै साचउ चवै छूटै सोग विजोगु ॥ नानक नामुन वीसरे जो तिसु भावै सु होगु ॥

गुरू साहब कुल मिलाके कोयी तिन्र महीने पंजाब (तलवंडी जां पक्खोके) रहे। पिंड विच्च तां मेला ही लग्गा रहन्दा। साधू संत, रोगी, दुखी बेचैन लोक दूरों दुक्क रहे सन। हुन महता कालू नूं वी कुझ अहसास हो रेहा सी कि सारी दुनिया गलत नही हो सकदी। माता त्रिपता रोज लंगर विच्च रुझी रहन्दी सी। कदी महता जी नूं खिझ्झ वी आ जांदी सी।

राय बुलार ने फिर बड़ी अधीनगी साहत अरज कीती कि मैं नूं कोयी सेवा बखशो। गुरू साहब ने केहा कि निरंकार हर जिय दी सेवा धुरो ला के भेजदा है। राय दे बार बार अरज करन ते गुरू साहब ने केहा कि मैं नूं अमृत वेले इशानान करन दी लोड़ हुन्दी है पर मैं अकसर वेखदा हां मनरे कोयी टोबा खूह नही चल रेहा हुन्दा।

राय तुरंत ताड़ गया ते अरज कीती कि तलवंडी विच्च तुहाडे नां दा टोभा (तलाब) होवेगा। (गुरदुआरा बाल

लीला नाल जो तलाब है इह ओहो टोभा ही है जो राय बुलार ने पुटवाय आ सी।)

गुरू साहब तलवंडी तों घुंमदे घुंमदे पक्खोके अजिते दे खूह ते परत आए।

मरदाना पहलां तां सोच के परत्या सी कि अग्रे तों बाबे नाल नही जाणा। तिन्र महीने घर रह के ते जो सतिकार लोकां तों उसनूं मिल्या सी उहदा मन्न फिर सैल करन लई त्यार हो गया। इकट्टे होए लोकां नूं उह दूर देशां विच्च कीती सैर बारे दसदा सी। लोक सुन सुन हैरान सन कि बाबा कदी बादशाहां दा प्राहुना हुन्दा कदी फकीरां दा ते कदी नंगे आसमान थल्ले फोके ही कट्टदा है। मरदाने दियां गल्ला सुन होर वी कई जवान बाबे नाल सैल ते जान लई त्यार सन। पर लंका दी उदासी मौके नाल जान लई बाबे ने बाकी जवानां नूं मना कर दित्ता।

## 1512- पक्खोके पहुंच गया बाबा सहुरा जवायी नूं घर ल्याउन गया

गुरू साहब सुलतानपुर तों चलके वक्ख वक्ख थांयी गुरमत दा प्रचार करदे होए पक्खोके तों 4 कि.मी उरां अजिते रंधावे दे खूह ते आ बिराजे। ओदों अजे दर्या रावी पिंड दोदे दे परले पासे भाव पहाड़ च वहन्दा सी। लगदा है कि जिस वेले गुरू साहब अजिते दे खूह ते पहुंचे अजित्ता ओथे हाजर सी। अजिते ने छेती ही पिंड वी खबर पहुंचा दिती कि गुरू साहब आए ने।

पहलां तां गुरू साहब दे सहुर्या उडीक्या कि शायद प्रवार नूं मिलन पक्खोके आवेगा। जदों राती वी गुरू साहब पिंड नां गए तां अगले सवेरे सहुरा मूल चन्द चोना अजिते रंधावे जो इलाके दा मुहतबर बन्दा, नूं नाल ल्या ते अजिते दे खूह ते पहुंच गए। गुरू साहब ने बहुत ही साद मुरादे कपड़े पहने होए सन। साहब ने आपने सहुरा दे पैरी हथ लायआ ते सति करतार केहा। सहुरा साहब अगो असीस देन दी बिजाए चुप्प रहे।

अजिते ने फिर गुरू साहब ते सवालां दी झड़ी ला दिती। कि बंगाल सुणिए अजे वी काल प्या होया आ मथुरा वाला मन्दर भला ढाह दिता वा? अते होर अनेकां सवाल कि सुलतानपुर छड्डुन उपरंत केहडे केहडे इलाके वेखे हन, आदि, आदि? गुरू साहब बड़ी हलीमी ते ठरम्मे नाल अजिते दे सवालां दे जवाब दिन्दे रहे। मूल चन्द भर्या पीता सभ सुणदा रेहा।

अखीर मूला बोल उठ्या, "उठ, चल हुन घर, कि इह कथा कहाणियां ही कही जाएगा?"

गुरू साहब ने केहा कि मैं इथे ही ठीक हां।

मूला कडूहक के बोल उठ्यां, "जित्या वेख इह छेई साली आया, ते है सूपुच्छ्या प्रवार दी सुक्ख सांद।"

शांती, सबर संतोख दे समुन्दर गुरू साहब चुप्प रहे।

अजिता वी बोल उठ्या कि बाबा जी प्रवार दी खबर तुहानूं लैनी चाहीदी है।



गुरू साहब ने केहा, "जित्या जिस करतार ने पैदा कीते हन, प्रितपालना वी उह कर रेहा है। कल्ह आउद्यां ही में सभ खबर सुरत लै लई सी।"

मूले ने फिर गुस्से विच्च आ ओही पुराना सवाल कर दुहराय दित्ता, "व्याह काहनूं करवायआ तूं? मेरी थी दी जिन्दगी क्यो खराब कीती?"

गुरू साहब ने सवाल दा कोयी जवाब नां दित्ता।

अखीर अजिते रंधावे ने बड़ी अधीनगी सहत बेनती कीती कि बाबा जी जे तुसीं पक्खोके नहीं जाना तां किरपा करो मेरे खूह नूं ही भाग लायी रक्खो।

मूला इक्क दिन गुरू साहब लई रोटी लै के खूह ते आया पर गुरू साहब नें रोटी नां खाधी। पर अजिते दे घरो जो आउदा सी उहदा सेवन कर लैदे सन।

इथे ही फिर माता सुलक्खनी (पेका नां घुंमी) आपनी माता भाव चन्दो रानी नाल गुरू साहब नूं मत्था टेकन आई। चन्दो रानी ने के बथेरियां सिर दियां ठीकरियां भन्नियां कि "पराहुण्या घर चल।" पर गुरू साहब शांत रहे ते उहदे गुस्से भरियां गल्लां दा कोयी जवाब नां दित्ता।

क्युकि गुरू साहब दी आमद दी खबर इलाके नूं लग चुक्की सी इस करके हुंम हुंमा के लोकायी अजिते दे खूह ते पहुंच रही सी। संगतां दी भीड़ करके प्रवारक मिलनी ज्यादा लंमी नहीं सी चली। छेती ही माता सुलक्खनी संगत दी सेवा विच पानी धानी पुच्छन विच रुझ गई।

पुत्तर लखमी चन्द पिता नूं मिलन नहीं आया। स्त्री चन्द पहलां ही सन्यास लै चुक्का सी ते किते दूर दुराडे गया होया सी।

अजिते दा खूह मुकद्दस असथान बण चुक्का सी। सारा दिन संगतां दी रौनक लग्गी रहन्दी सी। हौली हौली फिर सहुर्यां दे सारे प्रवार ने मिलना शुरू कर दित्ता। लखमी दास वी इक दिन आ मिल्या। कई अजोके इतहासकारां ने गुरू साहब दा पहलां दोदे दे पिंड जाना लिख्या है जो गलत है पिंड दोदा पक्खोक्यां दे बिलकुल नेड़े ही हुन्दा सी। दर्या रावी इहनां दोवां पिंडां दे पहाड़ विच वहन्दा सी। इतहास अनुसार ज्यादा समां साहब अजिते दे डेरे ते रहे ते कुझ समां दोदे दे डेरे नेड़े। दोदे

दा खूह पक्खोक्या दे नेड़े ही पैदा सी। इह वक्खरी गल है बाद विच दुनी चन्द क्रीड़ीए ने जो जमीन अलाट कीती उह पिंड दोदे दे लागे सी। जिथे करतारपुर साहब बइझा।

### बाबे ने पुत्तर दे व्याह ते सेहरा गायआ

(1512ई.) गुरू साहब ओदों पूरब विच गौड़ जां पुरी (उडीशा) सन जदों उनां नूं सुनेहा मिल्या कि अगले साल लखमी चन्द दा व्याह है इस करके हर हालत विच्च पक्खोके पहुंचो।

हेठां जो शबद दित्ता इस तों इहो प्रतीत हुन्दा है कि गुरू साहब व्याह विच्च शामिल होए। खुद्द दे फकीरी भेस विच्च होन दे बावजूद जेहड़ा कुड़मां ने गुरू साहब दे प्रवार नूं प्रवान कीता सी इस ते गुरू साहब अहसान वी जिता रहे ने। इह वी इशारा मिलदा है कि व्याह नानी चन्दो रानी चीनी ने ही कीता सी। मूल विच्च तां गुरू साहब करतार दा ही शुकराना करदे हन कि जिस ने पैदा कीता है उह ही सारा इंतजाम करदा है। गुरू साहब ने सज्जना मित्रा रिशतेदारां दा वी धत्रवाद कीता है।

याद रहे बाबा लखमी दास दा पहला व्याह स्याल गोत दे खत्तरियां विच्च होया सी। ऐतकां व्याह बटाले दे भंडारियां विच है। शबद तों इह वी लग्गदा है कि दोवां प्रवारां विच्चों किसे दा कोयी औगुन वी समाज दे विच्चार गोचरा सी। साहब ने केहा कि अगले दा गुन लै लओ।

१९ सतिगुर प्रसादि ॥ रागु सूही छंत महला 1 घरु 4 ॥ जिनि किया तिनि देख्या जगु धंधड़े लायआ ॥ दानि तैरै घटि चानना तनि चन्दु दीपायआ ॥ चन्दो दीपायआ दानि हरि कै दुखु अंधेरा उठि गया ॥ गुन जंज लाड़े नालि सोहै परखि मोहणीए लया ॥ वीवाह होआ सोभ सेती पंच सबदी आया ॥ जिनि किया तिनि देख्या जगु धंधड़े लायआ ॥1 ॥ हउ बलेहारी साजना मीता अवरीता ॥ इहु तनु जिन स्यु गाड्या मनु लियड़ा दीता ॥ लिया त दिया मानु जिन्स्यु से सजन क्यु वीसरह ॥ जिन्दिसि आया होह रलिया जिय सेती गह रहह ॥ सगल गुन अवगनु न कोयी होह नीता नीता ॥ हउ बलेहारी साजना मीता अवरीता ॥2 ॥ गुना का होवै वासुला कटि वासु लईजै ॥ जे गुन होवन्साजना मिलि साझ करीजै ॥ साझ करीजै गुनह केरी छोडि अवगन चलीए ॥ पहरे पटम्बर करि अडम्बर आपना पिड मलीए ॥ जिथे जाय बहीए भला कहीए झोलि अमृतु पीजै ॥ गुना का होवै वासुला कटि वासु लईजै ॥3 ॥ आपि करे किसु आखीए होरु करे न कोयी ॥ आखन ता कउ जाईए जे भूलडा होयी ॥ जे होइ भूला जाय कहीए आपि करता क्यु भुलै ॥ सुने देखे बाझु कहए दानु अणमंग्या दिवै ॥ दानु देइ दाता जगि बिधाता नानका सचु सोयी ॥ आपि करे किसु आखीए होरु करे न कोयी ॥

◆ सोढी 2- 614 अनुसार इह शबद करतारपुर विखे ओदों रच्या जदों गुरू साहब फिरोजपुर/दीपालपुर दे दौरें तों परते सन। पर पिच्छे वी वेख्या गया है कि गुरू साहब गुरबानी विच्च थांयी थांयी रमजां वी मारदे हन। शबद दी सुनेहा इहो इशारा करदा है कि किसे व्याह शादी मौके गायआ गया। फिर इस विच्च शुकराने वाली गल वी है। गुरू साहब ने थां थां शुकराने कीते हन पर हर थां निरंकार अकाल पुरख दे। पर इथे तां मित्रा दा वी धत्रवाद हो रेहा है। उज मूल विच्च उह निरंकार दा ही शुकराना करदे हन जदों कहन्दे हन कि जिन्ने पैदा कीते हन उह ही वेखदा है। गुरू साहब अजेही शबदावली सिरफ आपने प्रवार दे किसे बच्चे दे व्याह मौके ही कह सकदे हन।

◆ जिथों तक्क किसे चक्रवरती साधूं सुनेहा भेजन दी गल है ओदों साधूं संत आम ही तुरे रहन्दे सन। भारत भर तीरथ टिकाने तह ही सन सो हो सकदा किस साधूआं दे टोले नूं सुनेहा दित्ता होवे कि जे बाबा मिले तां उनु सुनेहा देणा। होर वेखो: दिलजीत सिंघ बेदी -सी चन्द